## चीनी उद्योग,

Dr. S.K. Singh.
Dept of Economics

चीनी उद्योग भारत में संगठित उद्योगों में से एक महत्वपूर्ण उद्योग है। सम्पूर्ण विश्व की दृष्टि से भारत का चीनी उत्पादन करने वाले देशों में दूसरा व गन्ने का उत्पादन करने वाले देशों में पहला स्थान है। यद्यपि भारत गन्ने से गुड़ एवं खाण्डसारी बहुत प्राचीन काल से बनाता व निर्यात करता रहा है, लेकिन आधुनिक ढंग का चीनी का उत्पादन तो भारत में बीसवीं शताब्दी की देन है।

(1) उद्योग का विकास – भारत में गुड़ एवं खाण्डसारी बनाने का कार्य अति पुराना है, लेकिन ढंग का चीनी बनाने का पहला मिल 1900 में बिहार राज्य में व दूसरा मिल 1904 में उत्तर प्रदेश में स्थापित किया गया। इस उद्योग की प्रारम्भ में प्रगति बहुत धीमी रही और 1914 तक देश में केवल 6 मिल ही स्थापित किये जा सके। इसका मुख्य कारण अधिक विदेशी प्रतियोगिता। धीरे-धीरे 1931-32 तक उनकी संख्या बढ़कर 31 हो गयी। 1932 में इस उद्योग को प्रशुल्क आई की सिफारिश पर संरक्षण (Protection) प्रदान कर दिया गया। इससे इस उद्योग को सांस लेने का मौका मिला जिसके फलस्वरूप चीनी मिलों की संख्या में भारी वृद्धि हो गयी और 1937 में मिलों की संख्या 132 तक पहुंच गयी। अगस्त 1939 में द्वितीय महायुद्ध प्रारम्भ होने से इस उद्योग को अपना विकास करने का मौका मिला। देश में चीनी की मांग भी बढ़ने लगी। अतः 1942 में चीनी का मूल्य नियन्त्रण एवं राशनिंग कर दिया गया जो 1947 में ही समाप्त किया गया। देश-विभाजन से पूर्व 1945-46 में देश में 138 मिल के जिन्होंने इस वर्ष में 9.23 लाख टन चीनी का उत्पादन किया। देश-विभाजन का इस उद्योग पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। 67 प्रतिशत चीनी मिलें भारत में ही रह गयी तथा अधिकांश गन्ना उत्पादन क्षेत्र भारत में हिस्से में आये।

योजनाओं में उद्योग की प्रगति – योजना काल में उद्योग के विकास के लिए दो बातों पर ध्यान दिया गया। एक तो मिलों का पूर्ण उत्पादन बढ़े जिससे उपभोक्ताओं को चीनी पर्याप्त मात्रा में मिल सके।